Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) ____________________________

   (Name) ____________________________

2. (Signature) ____________________________

   (Name) ____________________________

Roll No. | | | | | | | |

(In figures as per admission card)

Roll No.____________________________

(In words)

Test Booklet No.

D-0309

Time : **2 $^1/_2$** hours]

PAPER-III
PHILOSOPHY

[Maximum Marks : **200**

Number of Pages in this Booklet : **40**

Number of Questions in this Booklet : **26**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answer to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your name or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc., is prohibited.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुए रिक्त स्थान पर ही लिखिये ।

   इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है ।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।
   (ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं । दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें । इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे । उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा ।**
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है ।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे ।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें ।
8. **केवल नीले/काले बाल प्वाईंट पैन का ही इस्तेमाल करें ।**
9. **किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।**

PHILOSOPHY

दर्शन शास्त्र

PAPER-III

प्रश्नपत्र-III

Note : This paper is of **two hundred (200)** marks containing **four (4)** sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.

नोट : यह प्रश्नपत्र **दो सौ (200)** अंकों का है एवं इसमें **चार (4)** खंड हैं । अभ्यर्थियों को इनमें समाहित प्रश्नों का उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है ।

SECTION – I
खंड - I

Note : This section contains **five (5)** questions based on the following paragraph. Each question should be answered in about **thirty (30)** words and carries **five (5)** marks.

(5 × 5 = 25 Marks)

नोट : इस खंड में निम्नलिखित अनुच्छेद पर आधारित **पाँच (5)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस (30)** शब्दों में अपेक्षित है । प्रत्येक प्रश्न **पाँच (5)** अंकों का है । **(5 × 5 = 25 अंक)**

The fact seems to be that all our a *priori* knowledge is concerned with entities which do not, properly speaking, *exist*, either in the mental or in the physical world. These entities are such as can be named by parts of speech which are not substantives; they are such entities as qualities and relations. Suppose, for instance, that I am in my room. I exist, and my room exists; but does 'in' exist ? Yet obviously the word 'in' has a meaning; it denotes a relation which holds between me and my room. This relation is something, although we cannot say that it exists *in the same sense* in which, I and my room exist. The relation 'in' is something which we can think about and understand, for, if we could not understand it, we could not understand the sentence 'I am in my room'. Many philosophers, following Kant, have maintained that relations are the work of the mind, that things in themselves have no relations, but that the mind brings them together in one act of thought and thus produces the relations which it judges them to have.

This view, however, seems open to objections similar to those which we urged before against Kant. It seems plain that it is not thought which produces the truth of the proposition 'I am in my room'. It may be true that an earwig is in my room, even if neither I nor the earwig nor any one else is aware of this truth; for this truth concerns only the earwig and the room and does not depend upon anything else.

– The Problems of Philosophy.
B. Russell

ऐसा लगता है कि हमारा सम्पूर्ण प्रागनुभविक ज्ञान ऐसे तत्त्वों से सम्बन्धित है जिनके बारे में उचित रूप से कहा जा सकता है कि वे न तो मानसिक जगत में और न ही भौतिक जगत में विद्यमान हैं । ये तत्त्व ऐसे हैं जिन्हें शब्दों में प्रकट नहीं किया जा सकता और जो विशेष्य नहीं है । गुण और सम्बन्ध ऐसे तत्त्व हैं । उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि 'मैं अपने कमरे में हूँ । ' 'मेरी' सत्ता है और मेरे कमरे की भी सत्ता है । किन्तु क्या 'में' की सत्ता है ? तो भी, स्पष्टतया 'में' शब्द सार्थक है । यह उस सम्बन्ध को दर्शाता है जो 'मेरे' और 'मेरे कमरे' के बीच है । यह सम्बन्ध है, यद्यपि हम यह नहीं कह सकते कि इसका अस्तित्व उसी रूप में है जिसमें 'मेरी' और 'मेरे कमरे' की सत्ता है । 'में' के अन्तर्गत वह सम्बन्ध है जिसके बारे में सोचा और समझा जा सकता है क्योंकि यदि हम इसे न समझ पाए तो 'मैं कमरे में हूँ । ' वाक्य को भी हम नहीं समझ पायेंगे । काण्ट का अनुसरण करनेवाले कई दार्शनिकों का यह मत है कि 'सम्बन्ध' मन का कार्य है और सद् वस्तुओं का आपस में कोई सम्बन्ध नहीं होता किन्तु मन चिन्तन-प्रक्रिया में उन वस्तुओं को इकट्ठा कर देता है और इस प्रकार वह उन सम्बन्धों को निर्मित करता है जिन्हें वह उनमें देखता है ।

इस मत के विरुद्ध वैसी ही आपत्तियाँ उठाई जा सकती हैं जिन्हें हमने काण्ट के विरुद्ध उपस्थित किया है । यह स्पष्ट है कि 'मैं कमरे में हूँ ।' इस कथन की सत्यता चिन्तन द्वारा नहीं प्राप्त होती है । यह सत्य है कि एक कनखजूरा मेरे कमरे में है, भले ही इस सत्य के प्रति न मैं, न ही कनखजूरा और न ही किसी अन्य को उसका बोध हो, क्योंकि इस सत्य का सम्बन्ध कनखजूरे और कमरे से है, और यह किसी अन्य वस्तु पर निर्भर नहीं करता ।

– The Problems of Philosophy
B. Russell

1. Why is a priori knowledge concerned with entities which lack existence ?

   जिन तत्त्वों का अस्तित्व नहीं है , उनसे प्रागनुभविक ज्ञान क्यों सम्बद्ध है ?

2. Why are the entities of <u>a priori</u> knowledge not denoted by the names of substantives ?

प्रागनुभविक ज्ञान के तत्त्वों को विशेष्य शब्दों से क्यों नहीं निर्दिष्ट किया जा सकता है ?

3. Explain the sense in which I and my room exist but the relation between me and my room does not.

उस भाव की व्याख्या कीजिए जिसके अनुसार मेरी और मेरे कमरे की सत्ता है, किन्तु मेरे और मेरे कमरे के बीच कोई सम्बन्ध नहीं है ।

4. Are the relations work of mind ? Explain.

क्या सम्बन्ध मन के कार्य हैं ? व्याख्या कीजिए ।

5. How does the author react to the view that relations are products of mind ?

लेखक की इस मत के प्रति क्या प्रतिक्रिया है कि सम्बन्ध मन की उपज है ?

SECTION - II
खंड - II

Note : This section contains **fifteen (15)** questions, each to be answered in about **thirty (30)** words. Each question carries **five (5)** marks.

(15 × 5 = 75 Marks)

नोट : इस खंड में **पाँच-पाँच (5-5)** अंकों के **पंद्रह (15)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस (30)** शब्दों में अपेक्षित है । प्रत्येक प्रश्न के **पाँच (5)** अंक है ।

(15 × 5 = 75 अंक)

6. State two reasons in favour of Abhihitānvayavāda.

अभिहितान्वयवाद के पक्ष में दो युक्तियाँ दीजिए ।

7. Distinguish between Svārthānumiti and Parārthānumiti.

स्वार्थानुमिति एवं परार्थानुमिति में भेद कीजिए ।

8. Explain the Buddhist concept of Pañcaśila.

बौद्धों की पंचशील की अवधारणा की व्याख्या कीजिए ।

9. What is meant by 'Varṇadharma' ? Explain the Varṇadharma' as depicted in the Gitā.

'वर्ण धर्म' से क्या अभिप्राय है ? श्रीमद् भगवद्गीता में वर्णित 'वर्ण धर्म' की व्याख्या कीजिये ।

10. Explain the nature of Pratyakṣa according to Nyāya system.

न्याय दर्शन के अनुसार 'प्रत्यक्ष' के स्वरूप की व्याख्या कीजिये ।

11. Distinguish between Vyāvahārika sat and Pāramarthika sat. Is the book on the table Vyāvahārika sat or Pāramārthika sat ? Explain.

व्यावहारिक सत् और पारमार्थिक सत् में भेद बतलाइए । क्या मेज पर पड़ी पुस्तक व्यावहारिक सत् है अथवा पारमार्थिक सत् ? समझाइए ।

12. Discuss Regularity theory of cause.

कारण के नियमितता सिद्धान्त का विवेचन कीजिये ।

13. Explain S. Alexander's conception of space and time.

एस. एलेग्जेण्डर की दिक् और काल की अवधारणा की व्याख्या कीजिये ।

14. Examine the importance of the concepts of being and becoming.

सत् और संभूति की अवधारणा के महत्त्व का परीक्षण कीजिये ।

15. What are Cardinal Virtues ? Explain.

मुख्य सद्‌गुण क्या हैं ? व्याख्या कीजिये ।

16. What, in your view, is the most satisfactory theory of punishment ? Give reasons.

आपकी दृष्टि में कौन सा दण्ड-सिद्धान्त सर्वाधिक सन्तोषजनक है ? तर्क दीजिये ।

17. Explain the laws of thought.

विचार के नियमों की व्याख्या कीजिये ।

18. State the rules of quantification.

'क्वान्टिफिकेशन-नियमों' का निरूपण कीजिये ।

19. Discuss parasāmānya and aparasāmānya.

परसामान्य और अपरसामान्य का विवेचन कीजिये ।

20. What are the three types of Ṛṇa ? How can these be repaid ?

ऋण के तीन प्रकार कौन से हैं ? इनसे उऋण कैसे हो सकते हैं ?

SECTION - III

खंड - III

Note : This section contains **five (5)** questions from each of the electives/specialisations. The candidate has to choose only **one** elective/specialisation and answer all the **five** questions from it. Each question carries **twelve (12)** marks and is to be answered in about **two hundred** (**200**) words. **(5 × 12 = 60 Marks)**

नोट : इस खंड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता से **पाँच (5)** प्रश्न हैं । अभ्यर्थी को केवल **एक** ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता को चुनकर उसी में से **पाँचों** प्रश्नों का उत्तर देना है । प्रत्येक प्रश्न **बारह (12)** अंकों का है व उसका उत्तर लगभग **दो सौ (200)** शब्दों में अपेक्षित है । **(5 × 12 = 60 अंक)**

ELECTIVE – I

ऐच्छिक – I

21. Are religious values intrinsically other-worldly ? Discuss.

    क्या धार्मिक मूल्य आन्तरिक रूप से पारलौकिक हैं ? व्याख्या कीजिए ।

22. Is there an essential difference between the world-view as found in tribal religions and traditional religions ? Discuss.

    आदिवासी धर्मों एवं पारम्परिक धर्मों की विश्वदृष्टि में क्या तात्त्विक भेद है ? विवेचन कीजिये ।

23. Can there be just one way of understanding the Divine Being ? Discuss.

    दिव्य सत्ता को समझने का क्या मात्र एक मार्ग है ? विवेचन कीजिये ।

24. What, according to you, are the preconditions of a successful inter-religious dialogue and why ?

    आपके मतानुसार सफल आन्तर-धार्मिक संवाद की पूर्व शर्तें क्या हैं और क्यों ?

25. Discuss the nature and destiny of man in the light of Hinduism and Jainism.

    हिन्दू धर्म और जैन धर्म के आलोक में मनुष्य के स्वरूप एवं नियति का विवेचन कीजिये ।

OR / अथवा

ELECTIVE – II
ऐच्छिक – II

21. Explain Russell's theory of logically proper names.
    रसेल के तर्कत: समीचीन नामों की व्याख्या कीजिये ।

22. Explain Quine's arguments against the analytic synthetic distinction.
    विश्लेषणात्मक-संश्लेषणात्म प्रतिज्ञप्तियों के भेद के विरुद्ध क्वाईन के द्वारा दिये गये तर्कों की व्याख्या कीजिये ।

23. Explain Frege's arguments for introducing sense in his analysis of meaning.
    फ्रेगे के अर्थ के विश्लेषणों के सन्दर्भ में आशय (sense) को प्रविष्ट करने के लिये दिये गये तर्कों की व्याख्या कीजिये ।

24. Examine Wittgenstein's notion of rule-following.
    विटगेन्स्टाईन के नियम-पालन की धारणा का मूल्यांकन कीजिये ।

25. Explain Searle's distinction between different speech acts.
    सर्ल के वाणी के विभिन्न कार्य के भेद की व्याख्या कीजिये ।

OR / अथवा

ELECTIVE – III
ऐच्छिक – III

21. Does phenomenological approach lead to solipsism ? Discuss.
    क्या फेनामेनालाजी की विधि अहंमात्रवाद की ओर ले जाती है ? विवेचन कीजिये ।

22. Examine Gadamer's critique of hermeneutics as a method.
    एक विधि के रूप में शब्दार्थ मीमांसा की गादेमर कृत आलोचना का मूल्यांकन कीजिये ।

23. Examine Heidegger's critique of modernity.
    आधुनिकता की हाइडेगर कृत आलोचना का मूल्यांकन कीजिये ।

24. How does hermeneutic attempt to overcome objectivism and relativism ? Explain.

शब्दार्थ मीमांसा किस प्रकार वस्तुनिष्ठतावाद और सापेक्षिकतावाद की समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करता है ? व्याख्या कीजिये ।

25. Explain the notion of 'intentional consciousness'.

'प्रयोजनयुक्त चैतन्य' की अवधारणा की व्याख्या कीजिए ।

OR / अथवा

ELECTIVE – IV

ऐच्छिक – IV

21. Bring out the nature and significance of Māyā in Advaita Vedānta

अद्वैत वेदान्त में माया के स्वरूप एवं महत्त्व का विवेचन कीजिये ।

22. Discuss the concept of Brahman in the light of Shankar and Rāmānuja.

शंकर एवं रामानुज के आलोक में ब्रह्म की अवधारणा का विवेचन कीजिये ।

23. Discuss the concept of Bheda in Dvaita Vedanta.

द्वैत वेदान्त में भेद की अवधारणा का विवेचन कीजिये ।

24. Evaluate Nimbarka's system of bhedābheda.

निम्बार्क के भेदाभेद दर्शन का मूल्यांकन कीजिये ।

25. Why Vallabha's system is called Śuddha Advaita ? Explain.

वल्लभ के दर्शन को शुद्धाद्वैत क्यों कहते हैं ? व्याख्या कीजिये ।

OR / अथवा

ELECTIVE – V

ऐच्छिक – V

21. What according to Gandhi is the ideal relationship between truth and love ?

    गाँधीजी के अनुसार सत्य और प्रेम में आदर्श संबंध क्या है ?

22. What does Gandhi mean by tradition ? Discuss.

    परंपरा से गाँधी का क्या तात्पर्य है ? विवेचन कीजिए ।

23. How does Gandhi explain the importance of brahmacarya ? Explain.

    गाँधी ब्रह्मचर्य के महत्त्व की व्याख्या कैसे करते हैं ? व्याख्या कीजिए ।

24. Is Gandhi's notion of Trusteeship relevant in the contemporary world ? Explain.

    क्या गाँधी के ट्रस्टीशिप की अवधारणा समकालीन जगत् में प्रासंगिक है ? व्याख्या कीजिए ।

25. What, according to Gandhi, are the prerequisites for the success of Pancayati Raj ? Discuss.

    गाँधीजी के अनुसार सफल पंचायती राज की पूर्वापेक्षाएँ क्या हैं ? व्याख्या कीजिए ।

SECTION – IV
खंड – IV

Note : This section consists of **one** essay type question of **forty** (**40**) marks to be answered in about **one thousand** (**1000**) words on any **one** of the following topics.

(1 × 40 = 40 Marks)

नोट : इस खंड में एक **चालीस (40)** अंकों का निबन्धात्मक प्रश्न है जिसका उत्तर निम्नलिखित विषयों में से केवल **एक** पर, लगभग **एक हजार (1000)** शब्दों में अपेक्षित है । **(1 × 40 = 40 अंक)**

26. Is Secularism an Utopia ?

क्या धर्म निरपेक्षता एक यूटोपिया है ?

OR/अथवा

Karma and Re-birth as postulates of Indian Philosophy.

भारतीय दर्शन की पूर्व मान्यताओं के रूप में कर्म एवं पुनर्जन्म

OR/अथवा

Gandhi's vision of Social justice.

गाँधी की सामाजिक न्याय की दृष्टि

OR/अथवा

Mokṣa in Indian Philosophy.

भारतीय दर्शन में मोक्ष

OR/अथवा

Language and Philosophy.

भाषा एवं दर्शन

FOR OFFICE USE ONLY	
Marks Obtained	
Question Number	Marks Obtained
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	
20	
21	
22	
23	
24	
25	
26	

Total Marks Obtained (in words) ....

(in figures) ....

Signature & Name of the Coordinator ....

(Evaluation) Date ....